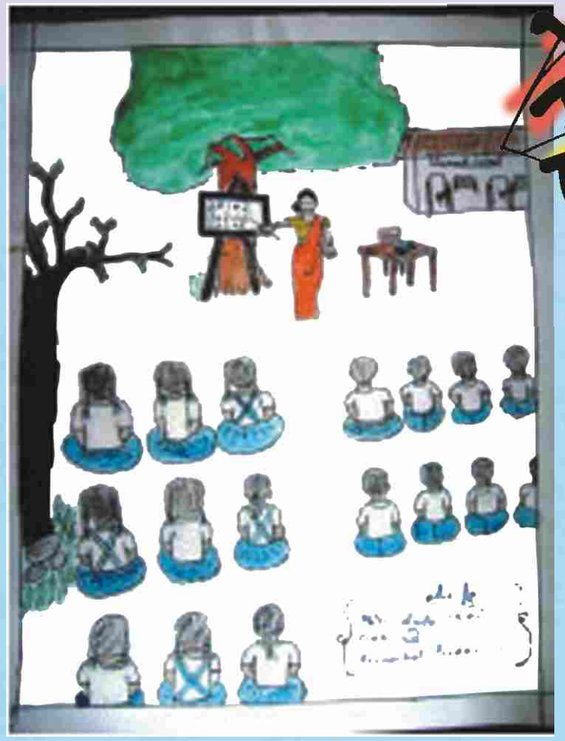

एक दिन विद्यालय का

एक दिन हमारे विद्यालय की ओर से कस्तूरबा ग्राम और चिड़ियाघर की सैर करने ले गए। वहाँ हमारे साथ शिक्षक गए हुए थे। कस्तूरबा ग्राम जो इन्दौर में स्थित है। वहाँ हमने महात्मा और उनकी पत्नी कस्तूरबा गाँधी से जुड़ी अनेक चीज़ें देखी। वहाँ हमने गाँधीजी की चप्पलें, उनकी अस्थियाँ, खून आदि देखा। कस्तूरबा ग्राम में ऐसी महिलाएँ रहती हैं जिनका कोई नहीं रहता है। वहाँ पर ऐसी महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें वहाँ पर मुफ्त में खाना, कपड़े आदि मिलते हैं। उन्हें दो या तीन सालों में इतना सिखाते हैं कि वे अपना गुज़ारा खुद कर सके। कस्तूरबा ग्राम में गायों को पाला जाता है।

–संजय कुमार, आठवीं, इंदौर

रमझिम रिमझिम बारिश आई

रिमझिम रिमझिम बारिश आई।
हवा पकड़कर सरसर लाई।
छाता ले निकले सब बच्चे।
एक बच्चे ने छाता छोड़ा।
तो सबने छाता छोड़ दिया।
भीगने लगे सब बच्चे,
और मौज बनाने लगे सब बच्चे।

–अवनीन्द्र कुमार राय, कोलकाता, प. बंगाल

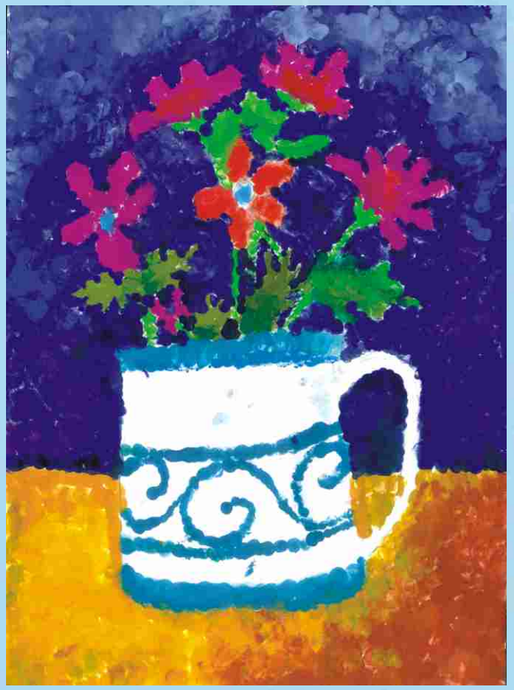

– वसुंधरा अरोड़ा, पाँचवीं, दिल्ली

हिम्मत मत हारो

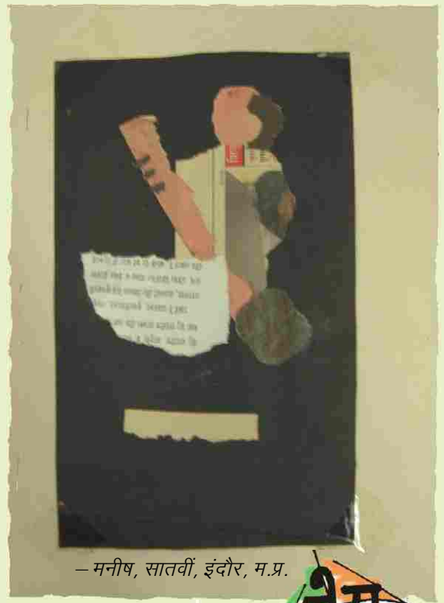

– मनीष, सातवीं, इंदौर, म.प्र.

मैं जन्म से दोनों पैरों से विकलांग थी। मेरे को हर कोई पूछते थे, "इसको पोलिओ है क्या.....?" बहुत चलने पर मैं गिर पड़ती थी। ऐसे ही मैं 12 साल की हो गई। मेरे मम्मी-पापा ने सभी इलाज करवाए मगर पैसे के कारण ऑपरेशन के लिए तैयार नहीं हुए। इसी प्रकार मैं, के.जी. 1 से 7 वीं तक पहुँची, मगर स्कूल में भी सभी लोग मेरी देखरेख करते थे। मम्मी-पापा ने कहा अपन गरीब है। इतना रुपया कहाँ से लाएँगे जिस तरह से हैं वैसे ही ठीक हैं। मगर एक दिन मेरी ज़िन्दगी में फूल की तरह आया। मैं होशंगाबाद में रहती हूँ। यहाँ पर ज़िला पुनर्वास केन्द्र है, उस में मेरा रजिस्ट्रेशन हुआ था। वहाँ पर अचानक "नारायण सेवा संस्था, उदयपुर" द्वारा एक शिविर का आयोजन किया गया। होशंगाबाद शहर के आजू-बाजू के सभी लोगों का मुफ्त इलाज किया गया। और इसी प्रकार छह बच्चों का ऑपरेशन के लिए नम्बर लगा। मैं बहुत खुश हुई मगर हमारे पापा तैयार नहीं थे। उनको सभी लोगों ने समझाया कि आपकी बेटी अच्छे से चलने लगेगी। आप लेकर आओ। उन्होंने मुझे एक लैटर दिया और मैं अपनी तैयारी करके मम्मी के साथ राजस्थान पहुँची दिनाँक 10-5-2007 को। 14-5-2007 को मेरा ऑपरेशन हुआ। कुछ दिन मेरे को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसी प्रकार दूसरे भी पाँव का ऑपरेशन 13-6-2007 को हुआ। इसी प्रकार मैं छह-सात महीने में थोड़ी अच्छी हुई। उसके बाद मैं स्कूल जाने लगी और 7 वीं की परीक्षा दी। अभी कक्षा 8 वीं में हूँ, अभी मैं अपने पैरों पर खड़ी हूँ। अपने काम खुद करती हूँ। आज मैं बहुत खुश हूँ। और हमारे परिवार में खुशी का दिन आया। आज हम दोनों बहन-भाई बहुत खेलते रहते हैं। जीना है, तो हिम्मत ना हारो।

– रिणु बावकर, होशंगाबाद, म.प्र.

– आशीष कुमार

इधर मत खसको

इधर मत खसको
उधर मत खसको
लगा एक धक्का
दब गया बख्खा।

ऐसी चली बस हमारी
लेके गई सौ से ऊपर
सवारी
दिन भर में बस यही है
एक बारी
जाना हो भौंरा या
डढ़ारी।

टिकट के पैसे पड़ते हैं
ज़रा भारी
क्या करें यह है
हमारी लाचारी।

– लक्ष्मी यादव